उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद

U.P. Council of Agricultural Research

अष्टम तल, किसान मण्डी भवन, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ–226 010

8th Floor, Kisan Mandi Bhawan, Vibhuti Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226010

पत्रांकः 660/एनआरएम/डब्लूबीएसएलएएजी/पीएल/2021 दिनॉकः 24–08–2023

दिनांक	:	24 अगस्त, 2023
समय	:	12:00 बजे
स्थान	:	उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति	:	संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की दसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2023–24 की दसवीं बैठक डा. संजय सिंह, महानिदेशक उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 24 अगस्त, 2023 को उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ के मौसम वैज्ञानिक, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक; शुआट्स, प्रयागराज के मौसम वैज्ञानिक; नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौ. विश्वविद्यालय, अयोध्या के मौसम वैज्ञानिक व धान प्रजनक; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; कृषि विभाग; गन्ना विभाग; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; मत्स्य विभाग; रेशम विभाग तथा परिषद के अधिकारियों/वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

प्रथम सप्ताह (24 से 30 अगस्त, 2023) का मौसम पूर्वानुमान

भारतीय मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान एवं उपग्रह से प्राप्त चित्रों के विश्लेषण के अनुसार आगामी सप्ताह (24 से 30 अगस्त, 2023) के आरंभिक चरण के दौरान (24 से 25 अगस्त, 2023) प्रदेश के उत्तरी एवं मध्यवर्ती हिस्सों में मेघगर्जन एवं वज्रपात के साथ अच्छी वर्षा के साथ–साथ पूर्वोत्तर तराई क्षेत्र में कहीं–कहीं भारी वर्षा होने की भी संभावना है तदोपरांत 26 अगस्त से वर्षा के क्षेत्रीय वितरण एवं तीव्रता में व्यापक कमी आने के कारण (26 से 30 अगस्त, 2023) के दौरान वर्षा मुख्यतः तराई इलाकों में छिट–पुट वर्षा तक सीमित रह जाने की संभावना है। इस सप्ताह के दौरान प्रदेश में अधिकतम तापमान सामान्य के आस–पास बने रहने तथा अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 80 से 95 प्रतिशत एवं न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 60 से 75 प्रतिशत के बीच रहने की संभावना है।

द्वितीय सप्ताह (31 अगस्त से 06 सितम्बर, 2023) का मौसम दृष्टिकोण

द्वितीय सप्ताह (31 अगस्त से 05 सितम्बर, 2023) के दौरान प्रदेश के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य से अत्यधिक कम वर्षा होने की संभावना के दृष्टिगत अधिकतम तापमान सामान्य से (1 से 3 डिग्री) अधिक रहने की संभावना है। इस दौरान प्रदेश में अधिकतम सापेक्षिक आर्द्रता 80 से 90 प्रतिशत एवं न्यूनतम सापेक्षिक आर्द्रता 60 से 70 प्रतिशत के आस–पास रहने की संभावना है।

01 जून से 24 अगस्त, 2023 तक प्रदेश में मानसून के दौरान औसत वर्षा 548.4 मिमी के दीर्घकालिक औसत के सापेक्ष 478.6 मिमी. प्राप्त हुई है जो सामान्य वर्षा का 87 प्रतिशत है। प्रदेश के सभी 75 जनपदों में से 03 जनपदों (एटा, बदायूं, मुजफफरनगर) में अत्यधिक वर्षा जबकि 10 जनपदों में अधिक वर्षा, 22 जनपदों में सामान्य वर्षा, 31 जनपदों में न्यून वर्षा एवं 05 जनपदों में अतिन्यून वर्षा (चंदौली, मिर्जापुर, भदोही, कौशाम्बी, मऊ) प्राप्त हुई है। मानसून के दौरान 24 अगस्त, 2023 तक सबसे अधिक वर्षा बिजनौर में 1026.4 मि.मी. हुई जो सामान्य से 49 प्रतिशत अधिक है। सबसे कम वर्षा कौशाम्बी में 158.6 मि.मी. दर्ज हुई जो दीर्घकालिक औसत से 61 प्रतिशत कम है।

कृषि विभाग, उ.प्र. से प्राप्त खरीफ फसलों के आच्छादन आंकड़ों के अनुसार दिनांक 21 अगस्त, 2023 तक कुल लक्ष्य 96.20 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 95.66 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 99.44 प्रतिशत है। सुगंधित धान का लक्ष्य 8.62 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 9.53 लाख हेक्टेयर की पूर्ति हो चुकी है जो लक्ष्य का 111 प्रतिशत है। संकर धान के लक्ष्य 15.88 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 15.36 लाख हेक्टेयर में पूर्ति हो

चुकी है, जो लक्ष्य का 97 प्रतिशत है। मक्का की बुआई के लक्ष्य 8 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 7.56 लाख हेक्टेयर में हो चुकी है, जो लक्ष्य का 94.54 प्रतिशत है। ज्वार के लक्ष्य 2.18 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.25 लाख हेक्टेयर की पूर्ति की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 103.56 प्रतिशत है। बाजरा के लक्ष्य 10.10 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 10.7 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 100 प्रतिशत है। उर्द के लक्ष्य 7.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 6.52 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 90 प्रतिशत है। मूंग के लक्ष्य 0.40 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.45 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 114 प्रतिशत है। अरहर के लक्ष्य 3.60 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.52 लाख हेक्टेयर में बुवाई की जा चुकी है, जो लक्ष्य का 98 प्रतिशत है। उल्लेखनीय है कि मूंगफली आच्छादन लक्ष्य 1.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 2.25 लाख हेक्टयर में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 180 प्रतिशत है। सोयाबीन के लक्ष्य 0.50 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 0.46 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 93 प्रतिशत है। तिल के लक्ष्य 4.25 लाख हेक्टेयर के सापेक्ष 3.51 लाख हेक्टेयर में बुवाई हुई है, जो लक्ष्य का 83 प्रतिशत है।

प्रदेश में मौसम के वर्तमान परिप्रेक्ष्य में किसानों को अगले सप्ताह कृषि प्रबन्धन के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- आगामी 26 अगस्त से 05 सितम्बर, 2023 तक वर्षा की संभावना नहीं है अतः कृषक खरीफ फसलों की क्रांतिक अवस्थाओं में सिंचाई की व्यवस्था करें।
- कम वर्षा वाले क्षेत्रों में पौधो के समुचित विकास हेतु विशेष रूप से धान में कल्ले व गाँठ बनने की अवस्था में पर्याप्त नमी बनाये रखे।
- धान की फसल में प्रारम्भिक अवस्थाओं (20-30 दिन) में खरपतवार से अधिक नुकसान होता है। अतः खरपतवार नियन्त्रण पर विशेष ध्यान दें। खरपतवार नियन्त्रण हेतु निकाई-गुड़ाई करें तथा यथा संभव पैडीवीडर का प्रयोग करें, नियंत्रण न होने पर संस्तुति अनुसार शाकनाशियों का प्रयोग करें।
- वातावरण में तापक्रम एवं नमी की अधिकता रहने से फसलों में रोग एवं कीट प्रभावी होंगे अतः कीट नियंत्रण हेतु पर्यावरण हितैषी उपायों यथा प्रकाश-प्रपंच, बर्ड पर्चर, फेरोमोन ट्रैप, ट्राइकोग्रामा तथा रोग नियंत्रण हेतु ट्राइकोडर्मा का प्रयोग करें।
- जलभराव वाले क्षेत्रों में धान में यूरिया की टॉप ड्रेसिंग से पूर्व यूरिया की मात्रा की दोगुनी मिट्टी में एक चौथाई गोबर की खाद मिलाकर 24 घण्टे तक रखने के उपरान्त टॉप ड्रेसिंग करना चाहिये। ऐसा करने से यूरिया रिसाव द्वारा नष्ट नहीं होगी।
- प्राकृतिक एवं जैविक खेती को बढ़ावा दिया जाय, कृषि रसायनों का प्रयोग वैज्ञानिक सलाह पर ही संस्तुति अनुरूप किया जाय।
- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशु चिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाईन नम्बर-1962 पर सम्पर्क कर योजना का लाभ लें।

धान की खेती

- रोपाई के 25-30 दिन बाद प्रथम टॉपड्रेसिंग तथा 45-50 दिन बाद द्वितीय टॉप ड्रेसिंग नत्रजन की शेष बची हुई मात्रा के एक चौथाई यूरिया से करें। इस बात का विशेष ध्यान रखा जाय कि यूरिया की टॉप ड्रेसिंग करते समय खेत में पर्याप्त नमी उपलब्ध हो।
- संकरी, चौड़ी पत्ती व मोथा खरपतवारों के नियंत्रण हेतु रोपाई के 15-20 दिन बाद नमी की स्थिति में बिसपाइरीबैक सोडियम 10 प्रतिशत एस.सी. 0.20 ली. प्रति हे. 500 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- धान में तनाबेधक, पत्ती लपेटक, बंका कीट एवं हिस्पा के नियंत्रण हेतु बाईफेन्थिन 10 प्रतिशत ई.सी. 500 मिली. प्रति हे. अथवा क्यूनॉलफॉस 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 लीटर 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4जी 18 कि.ग्रा. मात्रा को रेत या यूरिया के साथ मिलाकर 3 से 5 से.मी. स्थिर पानी में बुरकाव करें।
- वर्तमान मौसम शीथ ब्लाइट के अनुकूल है अतः प्रकोप दिखाई देने पर हेक्साकोनाजोल 5.0 ई.सी. की 1.0 ली. मात्रा को 500-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- वर्तमान मौसम भूरा धब्बा रोग के लिये अनुकूल है अतः प्रकोप होने पर मैकोजेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. मात्रा 500-750 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मक्का की खेती

- मक्का की बुवाई के 45–50 दिन बाद (सिल्किंग स्टेज) नत्रजन की कुल संस्तुत मात्रा की एक चौथाई टॉप ड्रेसिंग के रूप में दें।
- मक्का में तना छेदक के 10 मृत गोभ होने पर कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा. अथवा डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. प्रति हे. अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी. 1.50 ली. का प्रति हे. बुरकाव/500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- मक्के में फॉल आर्मीवर्म से 5 प्रतिशत पौध तथा 10 प्रतिशत गोभ क्षति की अवस्था में कीट नियंत्रण हेतु क्लोरएन्ट्रानिलीप्रोल 200 मिली. प्रति हेक्टेयर का प्रयोग 500 से 800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- जैविक विधि से कीट नियंत्रण हेतु ट्राइकोग्रामा अण्डयुक्त ट्राईकोकार्ड 50000 प्रति एकड़ की दर से पत्तियों की निचली सतह पर 5–6 दिन के अन्तर से दो बार नत्थी करें।

अरहर की खेती

- पूर्वी उत्तर प्रदेश में बाढ़ या लगातार वर्षा के कारण बुवाई में विलम्ब होने की दशा में सितम्बर के प्रथम पखवारे में बहार एवं पी.डी.ए.–11 की शुद्ध फसल के रूप में बुवाई की जा सकती है, परंतु कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. एवं बीज की मात्रा 20 से 25 कि.ग्रा. प्रति हे. की दर से प्रयोग करें।
- अरहर में पत्ती लपेटक का प्रकोप दिखाई देने पर डाईमेथोएट 30 ई.सी. 1 लीटर या इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. 200 मिली. प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।

उर्द–मूँग की खेती

- जो कृषक उर्द की बुआई अभी तक किन्हीं करणोंवश नहीं कर सके है, वह शेखर–1, शेखर–2 व शेखर–3 की बुआई इस माह में पूर्ण करें।
- उर्द/मूंग में बिरलीकरण कर पौधे से पौधे की दूरी 8–10 सेमी. कर दें तथा संकरी व चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों के नियंत्रण हेतु इमैजीथाइपर 10 ई.सी. की 750–1000 मिली. मात्रा 500 ली. पानी में घोलकर 20–25 दिनों बाद छिड़काव करें।
- उर्द /मूंग की पत्तियों पर सुनहरें चकत्ते पड़ गये हों या सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ गयी हो तो यह पीला चित्रवर्ण रोग (यलोमोजेक) है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। ऐसे रोगग्रस्त पौधों को खेत से उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए डाइमिथोएट 30 ई0सी0 01 लीटर या मिथाइल ओ–डिमेटान (25ई0सी0) 01 लीटर प्रति हे0 की दर से दो–तीन छिड़काव करें।
- उर्द व मूंग में सफेद मक्खी, तनाबेधक तथा चूसक कीटों के नियंत्रण हेतु ईमामैक्टीन बेन्जोएट 80 ग्रा. तथा थाईमेथोक्सम 200 मि.ली. प्रति एकड़ की दर से 200 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

तोरिया की खेती

- तोरिया की सम्पूर्ण उ.प्र. हेतु संस्तुत प्रजातियों टा–9, पी.टी.–303, भवानी मध्य उ.प्र. हेतु संस्तुत टाइप–36 तथा तराई क्षेत्र हेतु संस्तुत प्रजाति पी.टी.–30 के बीज की अग्रिम व्यवस्था कर लें ताकि सितम्बर के प्रथम पखवारे में इसकी बुआई हो सके।

मूंगफली की खेती

- मूँगफली की बुआई के 30–35 दिन बाद दूसरी निकाई–गुड़ाई कर खर–पतवार नियंत्रण करें तथा हल्की–हल्की मिट्टी चढ़ाते रहे। खूटिया (पेगिंग) बनते समय निराई गुड़ाई न करें। पेगिंग बनते समय अगर सूखे की स्थिति हो सिंचाई अवश्य करें।
- मूंगफली में जड सड़न एवं टिक्का रोग लगने का समय है अतः सतर्क रहें। प्रकोप होने पर खड़ी फसल पर मैंकोजेब अथवा कार्बेन्डाजिम 50 डब्लू.पी. 225 ग्राम/हे. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण 2.5 किग्रा. अथवा जीरम 27 प्रतिशत तरल के 3 लीटर अथवा जीरम 80 प्रतिशत के 2 किग्रा. के 2–3 छिड़काव 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर 10 दिन के अन्तर पर करें।
- मूंगफली में 35 से 40 दिन बाद 200 कि.ग्रा. जिप्सम प्रति हेक्टेयर डालकर मृदा में मिला दें अगर खड़ी फसल में पेगिंग हो रही हो तो जिंक सल्फेट के 5 ग्रा. प्रति लीटर या फेरस सल्फेट के 10 ग्रा. प्रति लीटर पानी के साथ घोलकर छिड़काव करें।
- मूंगफली में सफेद गिडार के प्रबंधन हेतु खड़ी फसल में क्लोरपाईरीफॉस 20 ई.सी. 4 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से जड़ों में अथवा सिंचाई के माध्यम से डालें।

गन्ना की खेती

- बेधक कीटों के जैविक नियंत्रण के लिये 50 हजार ट्राइकोग्रामा अंड युक्त ट्राइकोकार्ड प्रति एकड़ क्षेत्रफल में 8 से 10 स्थानों पर लगायें। कार्ड टुकड़ों में काटकर पंक्तियों की निचली सतह पर नत्थी कर दें। यह कार्य 10 दिनों के अंतराल पर दोहरायें।
- आगामी शरदकालीन गन्ने की बुआई वाला खेत यदि खाली है तो हरी खाद के लिये सनई व ढैंचा की बुआई करें।
- लाल सड़न रोग से प्रभावित खेतों में मेड़बंदी कर दें, जिससे संक्रमित सिंचाई जल से स्वस्थ फसल प्रभावित न हो। लाल सड़न रोग से प्रभावित क्लंप/मूढ़ को उखाड़कर नष्ट कर दें तथा उखाड़े गये स्थान पर ब्लीचिंग पाऊडर डाल दें।
- सिंगल बड/बड चिप विधि से नर्सरी तैयार करने हेतु सभी तैयारियां पूर्ण कर लें, जिससे कि सितम्बर के प्रथम सप्ताह में नर्सरी लगाई जा सकें।

सब्जियों की खेती

- बेहन हेतु पातगोभी, मध्यकालीन फूलगोभी, शिमला मिर्च तथा टमाटर आदि की नर्सरी में बुआई करें तथा पूर्व में बोई गई तैयार पौध की रोपाई भी यथाशीघ्र करें।
- परवल की गॉठ युक्त लताओं की रोपाई यथाशीघ्र समाप्त करें।
- शकरकन्द की संस्तुत प्रजातियों का कन्द लगायें ताकि समय से लतायें मिल सकें।
- इस समय सब्जियों में कीड़ों का प्रकोप सर्वाधिक होता है। अतः इससे बचाव हेतु नीम आधारित उत्पादों, वर्मीवाश अथवा संस्तुति के अनुरूप कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- बैंगन व मिर्च की तैयार बेहन की मेड़ों पर रोपाई करें।
- शाकभाजी फसलों में विषाणु जनित रोगों का प्रकोप होने पर प्रभावित पौधों को खेत से निकालकर जला दें अथवा मिट्टी में दबा दें तथा संस्तुत अंतःप्रभावी कीटनाशकों को छिड़काव करें।

बागवानी

- आम, अमरूद, आंवला, लीची एवं नीबू की उन्नतिशील किस्मों के नवीन बागों का रोपण अतिशीघ्र पूर्ण करें तथा पूर्व में लगाये गये बागों में जो पौधे किसी कारणवश मर गये हो उनके स्थान पर नये पौधे लगायें। आम के बाग के प्रथम 10 वर्षों में अधिक लाभ के लिये अंतःफसल के रूप में आलू, मिर्च, टमाटर, लोबिया तथा ग्लोडियोलेस की खेती की जा सकती है।
- शाखा गांठ कीट की रोकथाम हेतु डाईमेथिओएट 2 मिली0/ली0 या क्यूनालफास 2 मिली0/ली0 की दर से 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- आंवले में फलसड़न रोग की रोकथाम हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) तथा बोरेक्स (6 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- केला में पर्णचित्ती एवं एन्थ्रेकनोज रोग के नियंत्रण हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड (3 ग्राम प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें।
- केले में फल वाले पौधों में स्टेकिंग (सहारा) दें तथा केले की तलवार पुत्ती को छोड़ते हुये शेष पुत्तियों की कटाई करें तथा 50 से 60 ग्राम यूरिया प्रति पौधा देकर मिट्टी में मिलायें।
- केले में वर्तमान मौसम में बीटिल कीट को प्रकोप होता है जिसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस (1.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी) का छिड़काव करें अथवा कार्बोफ्यूरान 3 से 4 ग्राम प्रति पौधे की दर से गोफे में तथा मिट्टी में मिलायें।
- नींबू में कैंकर रोग से बचाव हेतु कॉपर आक्सीक्लोराइड 3 ग्राम अथवा स्ट्रेप्टोसाइक्लिन 600 मिलीग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- दो सप्ताह पुराना खट्टा मट्ठा तथा नीम का तेल क्रमशः 2/3 व 1/3 भाग मिलाकर कीटों के प्रकोप होने पर छिड़काव करें।

पशुपालन

- वर्तमान में खुरपका एवं मुंहपका बीमारी (एफ.एम.डी.) का टीकाकरण सभी पशुचिकित्सालयों में कराया जा रहा है। यह सुविधा सभी पशुचिकित्सालयों पर निशुल्क उपलब्ध है। बड़े पशुओं में गलाघोटू बीमारी की

रोकथाम हेतु एच.एस. वैक्सीन से तथा लंगड़िया बुखार की रोकथाम हेतु बी क्यू वैक्सीन से टीकाकरण करायें।

- लम्पी स्किन रोग (एलएसडी) एक विषाणु जनित रोग है, जिसकी रोकथाम हेतु पशुपालन विभाग द्वारा टीकाकरण प्रोग्राम चलाया जा रहा है। सभी कृषक/पशु पालक अपने निकटतम पशु चिकित्सालय से सम्पर्क कर इसकी रोकथाम संबंधी उपाय एवं टीकाकरण की जानकारी ले सकते हैं।
- आगामी सप्ताह में वर्षा न होने की संभावना के दृष्टिगत अतिरिक्त चारे (60–70 दिन) का साइलेज बनाकर संरक्षण करें।
- ज्वार का हरा चारा सूखे की स्थिति में पशुओं को न खिलायें।

मत्स्य पालन

- सभी हैचरियों एवं विभागीय मत्स्य प्रक्षेत्रों पर मत्स्य बीज उपलब्ध है। मत्स्य पालक अपने तालाबों में मत्स्य बीज सितम्बर तक बीज का संचय कर लें।
- जलीय गुणवत्ता के लिये तालाब में चूने का प्रयोग करें। उर्वरीकरण की दृष्टि से 250 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर चूने का प्रयोग उपयुक्त होता है। मत्स्य रोग नियंत्रण में भी सहायक होता है।
- जिन तालाबों में गन्दा पानी आ गया हो उनमें जियोलाइट 25 किग्रा./हे. की दर से बालू में मिलाकर तालाबों में डलवाएं। इससे पानी साफ हो जायेगा और बदबूदार गैसेज निकल जायेगी। ताजा पानी भी मिलायें।
- जिन तालाबों में मत्स्य बीज संचय हो चुका है उनमें प्लेंकटामीन 5 किग्रा. प्रति हे. की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें इससे तालाब में प्लेंकटान की मात्रा में वृद्धि होगी जो कि मछलियों का प्राकृतिक भोजन है।
- जो मत्स्य पालक बीज संचय कर चुके है वह अपने तालाबों में सीफैक्स 1 ली./हे. 200 ली. पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- जिन तालाबों में जलकुम्भी है उसे तत्काल निकाल दे।

रेशम

- वृक्षारोपण में गैप फिलिंग का कार्य करें।
- रेशम कीट पालन के इच्छुक कृषक अपने नजदीकी रेशम अधिकारी/प्रभारी से सम्पर्क कर जानकारी प्राप्त कर कीटपालन कार्य करें।
- शहतूत व अर्जुन के लगाये हुये नवीन पौधों की समुचित देखभाल कर आवश्यक नमी बनाये रखें।
- मानसून फसल के कीटपालन के समस्त तैयारियां पूर्ण कर लें। कीटपालन भवन एवं उपकरणों का 2 प्रतिशत फार्मलीन के घोल का छिड़काव कर विशुद्धीकरण कर लिया जाय तथा विशुद्धीकरण उपरांत कीटपालन भवन को 24 घंटे के लिये एयरटाईट बंद कर दें।

वानिकी

- वृक्षारोपण का कार्य यथाशीघ्र पूर्ण करें।
- वृक्षारोपण उपरांत जो पौधें मर गये हो उनके स्थान पर गैप फिलिंग करें।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 06 सितम्बर, 2023 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः– क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट *upcar.up.gov.in* पर भी उपलब्ध है।

24/8/23

(संजीव कुमार)
उप महानिदेशक

<u>प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।</u>

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।

4. स्टाफ ऑफीसर, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. अपर मुख्य सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
16. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
17. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
18. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
19. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।
20. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
21. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
22. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
23. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
24. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
25. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
26. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
27. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
28. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
29. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बाँदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
30. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
31. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
32. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
33. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
34. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
35. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
36. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
37. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
38. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
39. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
40. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
41. प्रदेश के समस्त कृषि विज्ञान केन्द्र
42. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
43. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

24-03-23

(विनोद कुमार तिवारी)
वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2023–24 की दसवीं बैठक दिनांक 24 अगस्त, 2023 की उपस्थिति

1. डा. संजय सिंह, महानिदेशक, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद।
2. श्री राजेन्द्र कुमार सिंह, अपर कृषि निदेशक (प्रसार) कृषि भवन, लखनऊ।
3. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
4. श्रीमती सुमिता सिंह, निदेशक, सांख्यिकी, कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश।
5. डा. सुरेन्द्र कुमार सिंह, प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (कीट विज्ञान विभाग), बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
6. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
7. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
8. डा. अतुल कुमार सिंह, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ।
9. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, क्राप प्रोडक्शन डिवीजन, आईजीएफआरआई, झांसी। (ऑनलाइन)
10. डा. यू.पी. शाही, प्राध्यापक मृदा विज्ञान एवं प्रधान अन्वेषक, ग्रामीण कृषि मौसम सेवा (जीकेएमएस)। (ऑनलाइन)
11. श्री अमर सिंह, संयुक्त गन्ना आयुक्त, गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश।
12. डा. विजय बहादुर द्विवेदी, संयुक्त निदेशक शाकभाजी, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
13. श्री ए.के.शुक्ला, सहायक निदेशक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
14. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,अयोध्या।
15. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
16. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी। (ऑनलाइन)
17. डा. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा। (ऑनलाइन)
18. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
19. श्री आशीष कुमार सिंह, सहायक निदेशक, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
20. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
21. डा. प्रवीन चरन, टेक्नीकल आफीसर, जी.के.एम.एस. परियोजना कालेज ऑफ फारेस्ट्री शुआट्स, प्रयागराज।
22. श्री आशुतोष कुमार, रेशम विकास अधिकारी, रेशम, उत्तर प्रदेश।
23. श्री सत्येन्द्र यादव, वरिष्ठ मत्स्य निरीक्षक, मत्स्य विभाग, उत्तर प्रदेश।
24. श्री राजेश कुमार, चारा विकास अधिकारी, पशुपालन, उत्तर प्रदेश।